बृहत सचित्र

श्री श्री जगन्नाथ महात्म्य कथा

अनेक तीर्थ वर्णन सहित

श्री जगन्नाथ महात्म्य कथा

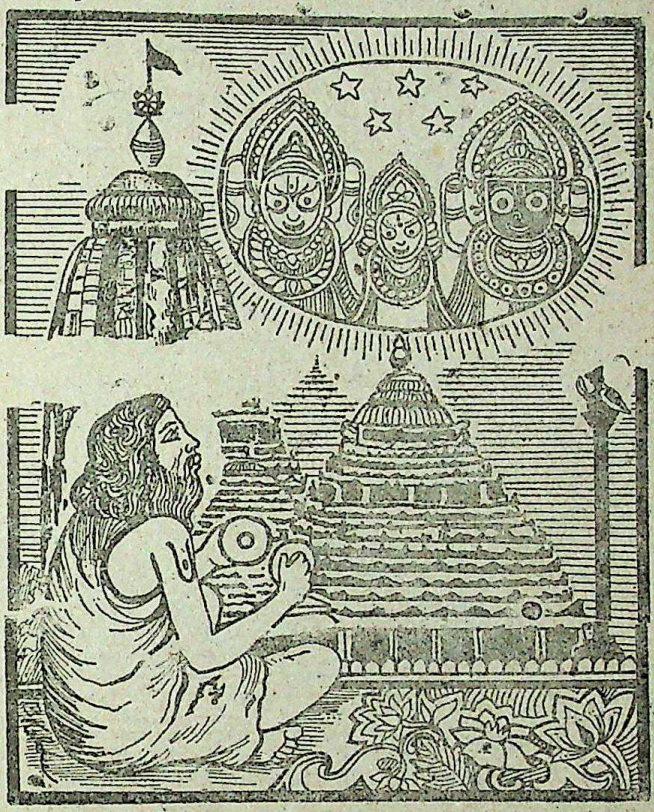

प्रकाशक : लक्ष्मीधर नायक

मरिचकोट छक, पुरी मूल्य ४-५०

श्री जगन्नाथजी का फगडोल यात्रा

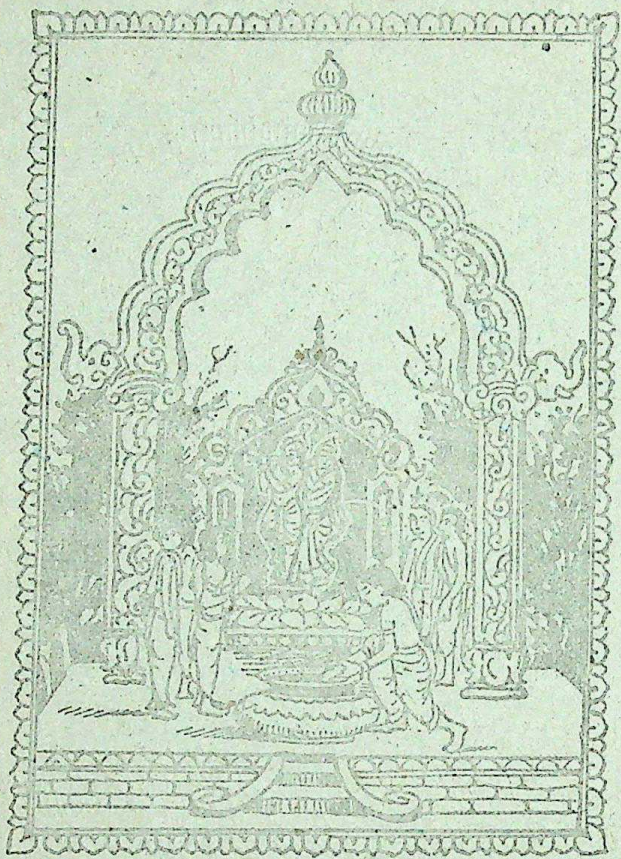

होली में फगडोल यात्रा होती है:—पुलहडी श्रीजगन्नाथ जी का फगडोल यात्रा के दिन मदनमोहनजी झूलते हैं। सब लोग उन पर फल चढ़ाते हैं। इसी दिन श्री जगन्नाथजी का राजभेट उत्सव होता है।

श्री जगन्नाथजी का चन्दन यात्रा का चित्र

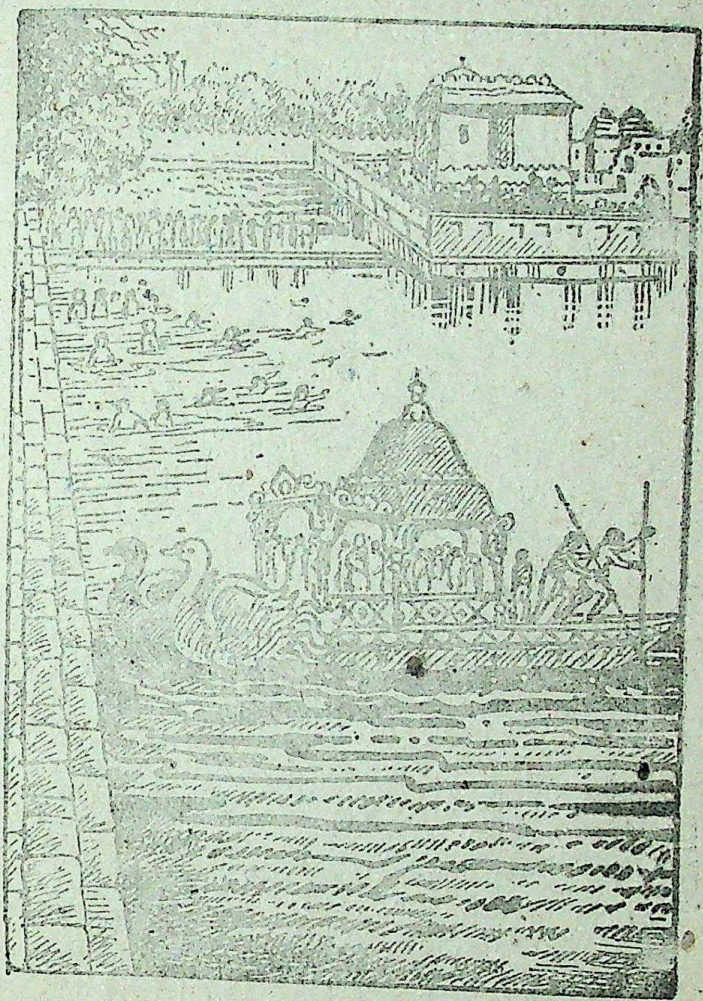

यह यात्रा वैशाख सुदी ३ से २१ दिन होती है। इस यात्रा में भगवान् का वही प्रतिनिधि मदनमोहन मूर्ति रोज

चन्दन तालाब में जाकर नाव पर अपने मंत्री लोकनाथ आदि महादेव को लेकर घूमकर चन्दन आदि लगाकर क्रीड़ा करते हैं और उस यात्रा में नृत्य गानादि भी होते और लोग चन्दन

श्री जगन्नाथ जी का स्नान यात्रा का चित्र

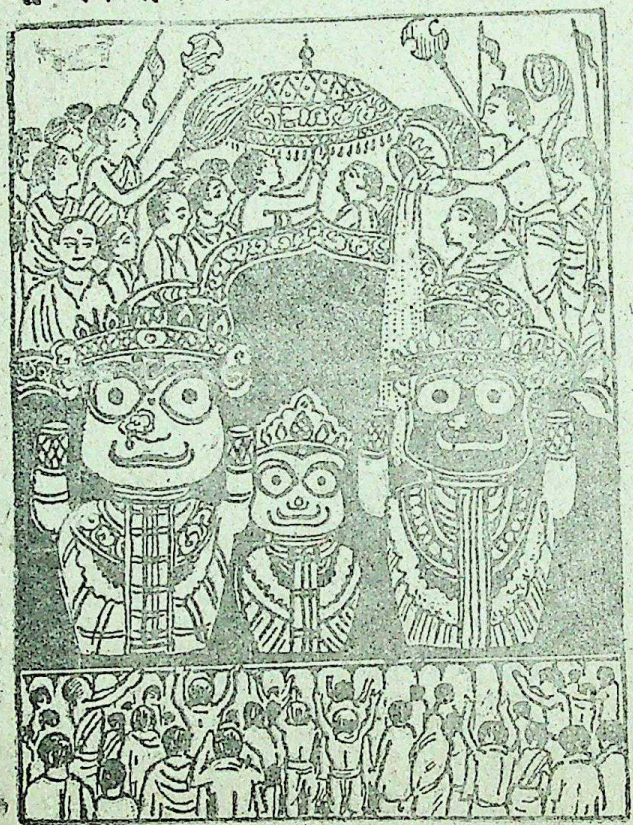

ताजाम स्नानादि चन्दन लेपन कर सुगंधित वस्तु व्यवहार करते हैं उस दिन से जगन्नाथजी के रथ बनने की साईत होती है।

यह स्नानयात्रा ज्येष्ठ सुदी १५ को होती है। उस दिन भगवान् की चारों मूर्ति (बलभद्र, सुभद्रा, जगन्नाथ) सुदर्शन रत्नवेदी से आकर स्नान वेदी में श्री १०८ सुवर्ण घट जल से स्नान करके गणेश रूप धारण करते हैं और उस दिन से भगवान् रत्न सिंहासन पर १५ रोज तक बीमार रहते हैं। उसके लिए १५ रोज तक पट बन्द रहता है।

यह रथ यात्रा आषाढ़ सुदी द्वितीया को होती है। उस दिन भगवान् रोगमुक्त हो स्नान करके रथ में आरूढ़ अपने जन्म स्थान (जनकपुर) जा वहाँ सात रोज रहकर फिर अपने रत्न सिंहासन पर विराजते हैं। यह यात्रा सब यात्राओं से अधिक है और उसके लिये शास्त्र में भी ऐसा लिखा है। 'रथसंस्थस्य दृष्ट्वा पुनर्जन्म न विद्यते' उसके अतिरिक्त और भी बहुत हैं।

प्रथम अध्याय

एक समय परम पावन नैमिषारण्य में शौनकादि अट्ठासी हजार ऋषियों ने सूतजी से नम्र होकर उत्तमोत्तम पवित्र तीर्थ व क्षेत्रों के माहात्म्य को पूछा तब सूतजी ने समस्त पृथ्वी-मंडल के तीर्थ व क्षेत्रों के मध्य प्रथम श्री पुरुषोत्तम (जगन्नाथ) क्षेत्र के माहात्म्य का वर्णन किया जिसकी कथा अति पवित्र यह है कि हे शौनक ! श्री पुरुषोत्तम क्षेत्र में परम पुरुष श्री नारायण

जगन्नाथ इस नाम से वास करते हैं यह क्षेत्र उड़िया देश में ऋषिकुल्या और वैतरणी नदी के मध्य में दस योजन चालीस) कोस के विस्तार से धर्म, अर्थ काम, मोक्ष को देनेवाला शान्ति-दायक है। हे मुनिगण ! उसी स्थान में वैतरणी नदी में और बिन्दु हृदय में स्नान गिरजा देवी नीलकंठ महादेव के दर्शन सूर्य-क्षेत्र और चन्द्रभागा नदी में स्नानादि जो यात्री वहाँ जाकर करता है। वह ऋषि तुल्य गिना जाता है और अन्य शनैः यात्रियों करके वन्दनीय होता है। हे शौनक ! श्रीपुरुषोत्तम क्षेत्र में शंखाकार शंखोदर स्थान नीलाचल में रोहिणी नामक कुण्ड यहीं पर कल्पवृक्ष आदि के दर्शनस्पर्श व पूजन दानादिक करने से यात्री के अनेक जन्म संचित पहाड़ नाश हो जाते हैं, यहाँ से बहुत ही नजदीक पृथ्वी रूपदेवी और लक्ष्मीयुक्त रत्न सिंहासन पर नील माधव भगवान् स्थित हैं। यहाँ से सौ हाथ की दूरी में नील माधव भगवान ब्रह्मरूपादि नरसिंह भगवान सदैव स्थित रहते हैं जिसके दर्शन पूजन मन्त्र से कोटिगुण फल मिलता है। ब्रह्मत्याति पाप नाश करने वाला कपिलमोचन तीर्थ वहीं पर नारायण शिवलिंग के दर्शन पूजन से कोटिगुण शिवलिंग का पूजन फल मिलता है। वहीं विष्णु भगवान का यमश, पाण्डुपुत्र देवी लोकपावनीगंगा मत्स्यावतारकी मूर्ति के दर्शन से समस्त पाप नाश होकर वाजपेयज्ञ का फल प्राप्त होता है। यदि कायादि कार्यों के वश किसी यात्री से वहाँ पर पाप भी हो जाय तो उक्त तीर्थों में स्नान मात्र से नाश हो जाते हैं।

यहाँ से कुछ आगे मङ्गलादेवी दक्षिणनन्दन गणेश के दर्शन से यात्री के समस्त विघ्न नाश हो जाते हैं। काल पर्वत के पूर्व तरफ मरीचिका शक्ति विरूपाक्ष आर्याशिजा देवी, कपालमोचन हरिणशङ्ख नीलकंठ सर्व मङ्गलाकण्डेय जी व मार्कण्डेय तालाब है जिनके दर्शन, पूजन स्नान आदि करके यात्री को वाजपेय यज्ञ फल प्राप्त होता है। जहाँ माधव भगवान् स्थित हैं वहीं पृथ्वी मण्डल के समस्त तीर्थ विराजमान हैं। उसी स्थान से स्वर्गस्थित देवतादि भी वास करने की इच्छा किया करते हैं। यह स्थान क्षेत्र से स्थान के युक्त चौदहे भुवन में मान करने योग्य अति उत्तम स्थान है। एक समय रोहिणी कुण्ड में एक पियासा काग जल पीकर शरीर को त्याग करके चतुर्बाहु होकर दिव्य रूप धारण कर वैकुण्ठ को चला गया तब यमराज ने विष्णु से यह महात्म्य पूछा तो विष्णु की आज्ञा से लक्ष्मी ने इस परम पावन क्षेत्र के महात्म्य को भली भाँति वर्णन किया यमराज से कह दिया कि इस पाँच कोश तीर्थ के शिर में तुम्हारा कुछ अधिकार नहीं है। जो कोई यात्री यहाँ एक क्षण मात्र भी स्थित हुआ है और अन्य देशों में भी तुम्हारा अधिकार न होगा। हे यमराज। मैं सत्य ही कहती हूं, हे सूर्यपुत्र ब्रह्माण्ड गोल जगन्नाथ क्षेत्र के बराबर अन्य क्षेत्र नहीं है, जो पुरुष सदैव यहीं वास करते हैं उनके महात्म्य मैं कहाँ तक वर्णन कर सकती हूँ। यह महात्म्य सुनकर अति प्रसन्न मन यमराज निज स्थान को चले गये। सूतजी कहते हैं कि

हे शौनक ! दारुणरूप महास्वरूप भगवान् श्री पुरुष क्षेत्र में वास करते हैं इससे बढ़कर अन्य पवित्र स्थान तीन लोक में नहीं है यहाँ के महात्म्य को वर्णन करने की किसी की सामर्थ्य नहीं है । हे शौनक ! इस समय ऋषिगण अति पवित्र महात्म्य को जो सुनेंगे सुनावेंगे पढ़ेंगे पढ़ावेंगे वह निःसन्देह बैकुण्ठ धाम जावेंगे । ॥ समाप्त ॥ ७

द्वितीय अध्याय

शौनकादि ऋषियों ने पुरुषोत्तम क्षेत्र के महात्म्य को और पूछा तब सूत जी ने फिर वर्णन किया कि हे शौनक ! मालवा देश में समस्त गुण युक्त अति तेजस्वी राजा इन्द्रद्युम्न रहता था । उक्त राजा एक समय आनन्द युक्त इन्द्रद्युम्न पूजन करता था कि एक दिन जटिल मुनि आये । राजा ने मुनि का पूजन सत्कार किया तब मुनि ने प्रसन्न होकर कहा कि हे राजन् ! उड़िया देश में समस्त तीर्थों से युक्त नील पर्वत श्री पुरुषोत्तम क्षेत्र है वहाँ पर जगन्नाथ जी समस्त देवगणों युक्त विराजमान हैं वहीं पर हे राजन् आप भी सकुटुम्ब जाकर वास करें । यह ऋषि आज्ञा पाया राजा ने निजपुरोहित के छोटे भाई को पुरुषोत्तम क्षेत्र प्रथम देखने को भेजा । वह जङ्गल में जाय विश्वावसु नामक शबर से मिलकर यहाँ के समस्त वृतान्त को जानकर रोहिणीकुण्ड में स्नान करके वट वृक्ष का स्पर्श करते हुए रत्न सिंहासन स्थित नील वपुधारी जगन्नाथजी के दर्शन करके

अनेक भक्ति भाव से नमस्कार पूजनआदि करके स्तुति किया बाद विश्ववसु के मकान पर आकर उत्तमोत्तम भगवान का प्रसाद भक्षण किया और शबर से पूछा कि इस घोर जंगल में तुमको यह उत्तमोत्तम पदार्थ कहाँ से मिलते हैं ? विश्ववसु ने कहा कि हे मित्र ! जगन्नाथजी के दर्शन पूजन के लिये स्वर्ग से देवता आते हैं और वहीं आकर पूजा करके उन उत्तमोत्तम पदार्थों को भोग लगाते हैं। उसी को हम लाकर यात्री सत्कार करते हैं और हम भी सकुटुम्ब भोजन करते हैं यह वर्तालाप करते हुए विद्यापति सो गया तब भगवान् जगन्नाथ ने स्वप्न दिखाया कि तुम जाकर राजा इन्द्रद्युम्न को सकुटुम्ब यहाँ ले आओ और तुम हमारी सभा में उपस्थित हो। बाद प्रातःकाल होते ही विश्ववसु से मिलकर विद्यापति निज देश में आकर राजा से समस्त वृत्तान्त कहते भये। तब राजा ने निज देश में नगारा बजवाकर कहला दिया कि सब लोग हमारे साथ उड़िया देश में बास करने के लिये चलो। यह आज्ञा पाय समस्त प्रजा राजा के साथ चलने को उद्यत हुई। राजा सब प्रजा को साथ में लेकर उड़िया देश को चल दिया। रास्ते में कौशाकी नदी (गंगा और चक्र तीर्थ एकाश्र विपिन) के माहात्म्य का वर्णन किया है राजन् ! यहाँ (गंगा सागर) स्नान मात्र से और बास करने से, यात्री को पुनर्जन्म नहीं लेना पड़ता। यह वचन सुनकर राजा अति प्रसन्न हुये। ॥ समाप्त ॥

तृतीय अध्याय

हे शौनकजी ! इतने ही में एकप्रवन में स्थित राजा की एक घंटे का शब्द सुनाई दिया तब राजाने नम्र होकर नारद से पूछा । नारद ने कहा कि हे राजन् ! एक समय काशी निवासी विश्वनाथ महादेवजी ने इस वन में तपस्या किया तब नील माधव प्रसन्न हुये । महादेवने वर माँगा कि हमारे नाम से यह वन प्रसिद्ध होवे तब नील माधव ने एवमस्तु कहा तभी से भुवनेश्वर नाम से प्रसिद्ध स्थान हुआ और तभी से लिंगेश्वर महादेव यहाँ पर सदैव वास करने लगे यह नारद के वचन सुनकर बिन्दु हृदय नाम तालाब में राजा स्नान करके कोटि लिंगेश्वर महादेव का दर्शन पूजन करते भये । नारद के साथ प्रातःकालमें राजा कपोत शांति मेंप्रवेश करके कपोतेश्वर विश्वेश्वर के महात्म्य पूछा । नारद ने कहा कि हे राजन् एक समय अर्जुन युक्त कृष्णनीलमाधव के दर्शन निमित्त यहाँ आए तो वन के वृक्ष के साथ विश्वेश्वर शिव की स्थापना करके ऐसे घोर जंगल में बड़े-बड़े राक्षसों को मारा तभी से विश्वेश्वर नाम के शिव प्रसिद्ध हुए । एक समय का काशीस्थ शिव नीलमाधव के दर्शन करके लौटे तो कपोत के स्थान पर आये तभी से यह कपोतेश्वर नाम के शिव प्रसिद्ध हुए । बस इतने ही में राजा की बांयी आँख फरकी तब इसका फल नारद से राजा ने पूछा नारद ने कहा कि तुम्हारे आज पुत्र उत्पन्न

होनें वाला है। इससे आज आपको नीलमाधव के दर्शन नहीं मिलेंगे जिस समय तुमने विद्यापति को भेजा था तभी से भगवान अन्तर्धान हो गये हैं। स्वर्णकृत बाल पीतवर हो गई। यह वचन सुनकर राजा अति दुःखी हुआ तब नारद ने ज्ञानोपदेश राजा को सुनाया इस भाँति वार्तालाप होते हुए राजा नीलमाधव के मन्दिर के पास पहुँचा तब नारद ने कहा कि हे राजन्! इस समय भगवान् श्वेत दीप को चले गये हैं इतने ही में आकाशवाणी हुई कि हे राजन्! तुम से जो कुछ नारद कहैं इसको तुम सत्य मानकर इनकी आज्ञाको मानो यह शब्द सुनकर राजा अति प्रसन्न हुआ और नारद के साथ चल करके ब्रह्मा द्वारा स्थापित नीलकण्ठ महादेव के पास गया वहाँ पाँच राति रहकर विश्वकर्मा द्वारा एक उत्तम मन्दिर बनाकर नरसिंह भगवान् को स्थापित किया फिर नारद की आज्ञा से एक सौ अश्वमेध सामग्री युक्त यज्ञशाला बनवाई और एक सौ यज्ञ नारद सहित किया राजा सात रोज बिना जल अन्न के व्रत धारण किया यज्ञ द्वार पर स्थिर रहा तब भगवान् प्रसन्न होकर स्वप्न में चतुर्बाहु धारण करके लक्ष्मी और बलदाऊ युक्त दर्शन दिया तब राजा ने अनेक भाँति स्तुति किया बाद आँख खोलने पर किसी को न देखा यह हाल नारद प्रति राजा ने कहा नारद ने अनेक भाँति से राजा को सन्तुष्ट किया प्रातःकाल राजा नारद के साथ समुद्र स्नान को गये और स्नान करके ज्योंही बाहर निकला त्योंही एक वृक्ष और नारायण भगवान् के साक्षात् दर्शन मिले राजा

ने अति प्रसन्न होकर स्तुति पूजन किया दारू रूप भगवान् को यज्ञशाला में स्थिर करके समस्त कर्म को सम्पूर्ण करके राजा के भगवान् से सदैव स्थिर रहने को सादर प्रति पूछा उसी समय में भगवान् प्रगट होगे तुम यहाँ पर पन्द्रह रोज उत्सव करो फिर एक बढ़ई आवेगा उसको तुम मन्दिर में बन्द कर देना बाहर से खूब बाजा बजवाना वह भीतर दारूरूप भगवान् की प्रतिमा बनायेगा। बस, यह शब्द सुनकर राजा अति प्रसन्न हुआ और आकाशवाणी के कहे तुल्ये अस्त्रको लिये एक बढ़ई आया राजा ने उसी भाँति उसको मन्दिर में बन्द करके बाहर राजा ने अति उत्सव किया खूब बाजा बजवाये। ॥ समाप्त ॥

चतुर्थ अध्याय

उसी समय देवतादि ने आकाश में स्थित होकर नृत्य गान करते हुए पुष्प वृष्टि किया। उस समय बलभद्र सुभद्रा युक्त श्रीजगन्नाथजी प्रकट हुए तब मन्दिर खोला गया और नारायण का सभी ने दर्शन, पूजन किया और स्तुति करके राजा इन्द्रद्युम्न की बड़ी प्रशंसा की और निज स्थानों को चले गये। बाद, राजा ने उस मन्दिर को खूब ऊँचा फिर बनवाया और नारद के साथ राजा विश्वसु और विद्यापति को लेकर पुष्पक विमान में चढ़कर ब्रह्मा को बुलाने के निमित्त ब्रह्मलोक को गये। वहाँ जाकर राजा ने इन्द्रादि देवताओं को देखा, बाहर नारद के साथ राजा को ब्रह्मा के दर्शन मिले, राजा ने

अनेक भाँति स्तुति किया नारद ने राजा का मतलब ब्रम्हा प्रति कहा कि हे ब्राह्मण ! आप चलकर दारुमय जगन्नाथजी की प्रतिमा की प्रतिष्ठा कर दीजिये इतनी बात होती ही थी कि दुर्वासाजी आये । दुर्वासा का सत्कार होने के बाद जो नारद ने भला से कहा वही दुर्वासा ने भी प्रतिष्ठा करने को कहा । तब ब्रह्मा ने कहा कि हे समस्त देवताओं ! तुम भी प्रतिष्ठामें आना मैं भी चलूँगा लेकिन राजा तुम्हारी समस्त यज्ञ सामग्री वहाँ नष्ट हो गई कारण कि तुमको वहाँ से आये कई मन्वन्तर बीत गये वहाँ पर सिवाय मन्दिर और मूर्ति के कुछ नहीं रहा उससे नारद शंखनिधि चक्रनिधि को साथ में लेकर वहाँ जाके सामग्री इकट्ठा कराओ बाद में आकर मैं प्रतिष्ठा कराऊँ यह आज्ञा पाय राजा इन्द्रद्युम्न वहाँ से चला आया । ॥ समाप्त ॥

पञ्चम अध्याय

वहाँ आकर राजा मन्दिर के पास सबको देखते ही हुए जगन्नाथ को देखा स्थापित हैं सो झट मूर्ति को उठा के पूर्व द्वारा से लाकर मूर्ति को बाहर रख दिया और क्रोध करके पूछा कि इस मूर्ति को किसने स्थापित किया है, तो मालूम हुआ कि गालव राजा ने मन्दिर जीर्णोद्धार करके स्थापना किया है यह सुन राजा ने झट चढ़ाई कर दी, गालव राजा भी आकर पहुँचा तब नारदने गालव राजासे समस्त हाल कहा राजा इन्द्रद्युम्न को कहा यह सुनकर लज्जित होकर निज

राज्य देकर इन्द्रद्युम्न के पीछे जा बैठा फिर राजा इन्द्रद्युम्न ने मन्दिर को साफ कराया, तीन रथ बनवाये ब्रह्मा का ध्यान किया कि हंसस्थित ब्रह्माजी आकर उपस्थित हुये, बाद समस्त सामग्री को देखकर ब्रह्मा अति प्रसन्न होकर प्रतिष्ठा कराके, रत्नवेदी में यथायोग्य स्थापन कराये सुदर्शन आदि को स्थित कराके भगवान स्तुति किया और जय शब्द करके राजा इन्द्रद्युम्न को धन्यवाद दिया। ॥ समाप्त ॥

षष्ठ अध्याय

सूतजी शौनक से बोले कि हे शौनक! दारुमय भगवान की प्रतिष्ठा ब्रह्मा ने वैशाख शुक्ल अष्टम बृहस्पति पुष्य नक्षत्र में कराया। बाद इन्द्रद्युम्न राजाको राज्यशासन पर स्थित किया, दारुमय जगन्नाथजी अति प्रसन्न हो राजा से बोले कि मैं तुमको अपनी अनपायनी भक्ति देता हूँ। मैं यहाँ ब्रह्मा के द्विपरार्द्ध के अन्त तक वास करूँगा। मैं आजन्म तथापि ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा को मेरा जन्म दिन, उस तिथि से पन्द्रह रोज तक मन्दिर को बन्द रखना। बाद आषाढ़ शुक्ल द्वितिया को रथोत्सव करना आषाढ़ शुक्ल एकादशी को मेरा शयन श्रावण शुक्ल पूर्णिमा को हमारा बार उत्सव, भाद्र शुक्ल एकादशी को हमारा करवट लेना, कार्तिक शुक्ल एकादशी को उत्थानान, मार्गशीर्ष शुक्ल छठ को हमारा शृंगार, पौष शुक्ल पूर्णिमा को हमारा पुष्पेयोभिक चतुर्दशी को हमारा

छमकाषण, वैशाख शुक्ल और फाल्गुन शुक्ल पुर्णिमा को डोलोत्सव चैत शुक्ल त्रितिया को चन्दनयात्रा कराना। इस भाँति बारह मास मेरे बारह उत्सव है, राजन तुम करना। हे शौनक! इस भाँति जगनाथजी के वचन को सुनकर सब लोगों ने भगवान कि फिर से स्तुति किया और निज स्थान को चले गये।

॥ समाप्त ॥

सप्तम अध्याय

सूतजी शौनक से कहा कि हे शौनक! यात्री प्रथम रोहिण-कुण्ड में स्नान करके अक्षयवट नीलचक्र विघ्नेश गनेश नृसिंह विमलादेवी देवताओं की प्रार्थना कर पातालेश्वर जय विजय को नमस्कार करके स्वस्थ चित्त से बलभद्रसुभद्रा और श्रीजगन्नाथजी के दर्शन पूजन नमस्कार करें इस विधि से हे शौनक! जो यात्री विष्णु भगवान का दर्शन पूजन करते हैं उनको पद पद में अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है इस पूजित क्षेत्र के बराबर अन्य कोई क्षेत्र नहीं है। ॥ समाप्त ॥

अष्टम अध्याय

सूतजी इतनी कथा कह कर बोले कि हे शौनक! यात्री श्वेतगङ्गा स्नान करके श्रीजगदीशपुरी में तीन दिन अवश्य ही वास करें श्वेतगङ्गा में श्राद्ध कर श्वेतमाधव आदि जो वहाँ पर स्थित देवता हैं उनका दर्शन करते हुए रास्ते में साक्षीगोपाल के दर्शन करता हुआ यात्री निज स्थान [मुकाम] को आवे। घर

पर आकर ब्राह्मण भोजनादि यथा शक्ति करावे इस भाँति की यात्रा करने से पद पद अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है। श्री जगन्नाथजी के प्रसाद भक्षण करने से कोटि कपिला गौ के दान करने का फल प्राप्त होता है। श्रीजगन्नाथजी का प्रसाद या माला स्पर्श किया भी हो तो भी भक्षण ब्राह्मणादि को करना चाहिए। प्रसाद के खाने से श्री जगदीशपुरी के समस्त स्थानों के जाने का फल प्राप्त होता है। इससे बिना विचार किये जगदीश के प्रसाद को खालेवें। अनादर कभी न करें इस पुनीत श्रीजगन्नाथ महात्म्य को जो पुरुष पढ़ेंगे, पढ़ावेंगे, सुनेंगे, सुनावेंगे या एक एक प्रति पुस्तक ब्राह्मण को दान करेंगे उन्हें यहीं बैठे दर्शन का फल प्राप्त होगा। शौनक! इन्द्रद्युम्न राजा नारद के स्थान संदेह वह लोक को चला गया और मैं भी इस कथा को यहीं पर समाप्त करता हूँ। शौनकादि ऋषियों ने सूतजी की पूजा करी और प्रसन्न मन धन्य-धन्य शब्द कहकर कथा को समाप्त किया।

श्री जगन्नाथ पुरी गाईड (पुरुषोत्तम क्षेत्र)

यह तीर्थ उड़ीसा प्रान्त के समुद्र तट पर बसा हुआ है और (द० पूर्वी० रे०) का एक सुप्रसिद्ध स्टेशन भी है। खुरदा रोड जंकशन से एक ब्रांच लाइनपुरी को गई है। स्टेशन से तीर्थस्थान लगभग डेढ़ या दो मील के दूरी पर है। यहाँ अनेक धर्मशालायें हैं। स्टेशन से रेक्सा, घोड़ा-गाड़ी तथा मोटर की सवारियाँ मिलती हैं।

श्री महाप्रभुका मन्दिर

पुरी के बीच में प्रधान सड़क के आखीर पश्चिम समुद्र से लगभग १ मील उत्तर बीस फीट ऊँची जमीन पर जिसको "नील गिरी" कहते हैं मन्दिर बना है मन्दिर के अन्दर अन्य धर्मावलम्बी के लोग तथा चमड़े की कोई चीज जाने नहीं पाती। मंदिर घेरे में एक तरफ ६६५ फीट और दूसरी तरफ ६१५ फीट है। इसके चारो तरफ फाटक है। पूरब का फाटक सब फाटकों से उत्तर है। दरवाजे के दोनों तरफ दो सिंह की मूर्तियाँ हैं। इसी से इनको नाम सिंहद्वार पड़ा है। सिंहद्वार के आगे काले रङ्ग के एक ही पत्थर का ३५ फीट ऊँचा १६ पहल का सुन्दर गरुड़स्तम्भ खड़ा है, जिसके सिर पर सूर्य के सारथी अरुण की मूर्ति है! जगन्नाथजी के खास मन्दिर के आगे पूरब की ओर नृत्य मन्दिर और इसके आगे भोग मन्दिर और जगमोहन मन्दिर है और ये सब परस्पर मिले हुए हैं। इतिहास से जान पड़ता है कि जगन्नाथ जी के वर्तमान मन्दिर को राजा अनङ्गभीमदेव ने बनवाया है। १४ वर्ष काम होने के उपरान्त सन ११९९ ई० में मन्दिर तैयार हो गया। नृत्य मंदिर पीछे बना हुआ है। भोग मन्दिर पीछे से महाराष्ट्रो ने बनवाया है।

जगन्नाथजी का खास मन्दिर १९२ फीट यानी इमारती गज से ६० गज ऊँचा ८० फीट लम्बा और इतना ही चौड़ा है। चारो ओर मन्दिर और जगमोहन पर स्त्रियों और पुरुषों की बहुत सी प्रतिमायें बनी हैं और लिखित चित्र भी हैं।

और मंदिर के ऊपर बाये कटिस्थान पर दक्षिण की कोठरी में कलियुग की प्रतिमा और शिखर पर नीलचक्र और पताका लगी है। मार्कण्डेय तालाब, चन्दन तालाब, श्वेतगंगा पार्वती सागर (लोकनाथ के पास) श्री इन्द्रद्युम्न तालाब (जिसे लोग पंचतीर्थ कहते हैं) पुरी में पाँच महादेव विख्यात हैं, लोकनाथ, मार्कण्डेश्वर, कपाल मोचन, तपेश्वर और नीलकण्ठ।

रत्नवेदी

पत्थर की ४ फीट ऊँची और १६ फीट लम्बी वेदी है, यह मन्दिर के भीतर पश्चिम की ओर है। रत्नवेदी के ऊपर को तरह ६ फीट लम्बा सुदर्शनचक्र है इसी के दक्षिण ओर जगन्नाथ बलभद्र और सुभद्रा की मूर्तियाँ हैं। जगन्नाथजी के एक तरफ लक्ष्मी जी और दूसरी ओर सत्यभामा विराजमान हैं और सामने इन्द्रद्युम्न का धातु निर्मित प्रतिमा है।

आरती शृङ्गार और वेष

बड़े तड़के जागरण के समय मंगल आरती और शृङ्गार हुआ करता है। इसके बाद अवकाश वेष फिर प्रहर वेष और फिर इसके पश्चात् चन्दन लेपा वेष बनाया जाता है। इन सभों में बड़ा शृंगार वेष है जो ठीक गोधुली के बाद सन्ध्या धूप के तुरंत ही पीछे माना जाता है। इन सभों के अतिरिक्त समय समय पर जगन्नाथ जी का दामोदर वेष, वामन वेष, बुद्ध वेष, गणेश वेष आदि बनाये जाते हैं।

मन्दिरके अन्दर मुक्ति मण्डप, अक्षयवट जिसे लोग अंक मान यही प्रलय कालसे विष्णु की बालमूर्ति है जिसको बाल-मुकुन्द कहते हैं। उसी तरफ रोहिणी कुण्ड नामक एक छोटा कुण्ड है। जिसके निकट चतुर्भुजी विमला देवी, नृसिंहजी, लक्ष्मी एकादशी आदि वसुदेव देवियों का मन्दिर है। बड़े मंदिर से पश्चिम सरस्वती अमाबाई कर्म लिखने वाली विधाता काली जो इत्यादि देव मूर्तियां हैं उत्तर के पास शीतलाजी की मूर्ति है। इस हाते के भीतर लगभग ५१ स्थान और मंदिर है।

बाहर के हाते में सिंह दरवाजे के ऊपर घेरे के भीतर २१ सीढ़ियों के ऊपर मंदिर का फर्श है। दरवाजे के दाहिने ओर यहाँ प्रसाद बेचने वालों की दूकान है। फाटक के मेह-राबी के ताख में श्री जगन्नाथजी की एक छोटी मूर्ति है जिसको लोग पतित पावन कहते हैं। कुछ जाति के लोग जो मंदिर के हाते में नहीं जाने पाते इस मूर्ति का दर्शन करते हैं। सिंह दरवाजे के उत्तर स्थान की वेदी है जहां जल में श्रीजगन्नाथ जी स्नान के लिए जाते हैं। दरवाजे के पास एक इमारत है जिसमें महाप्रभु का स्नान देखने के लिए लक्ष्मीजी बैठती हैं इसी तरफ एक और इमारत है।

जहां लक्ष्मी जी श्री महाप्रभु को उनके स्नान के बाद उनके स्वागत के लिए जाती हैं। बाहर के हाते में जगन्नाथ जी का पाठशाला है। हाथी फाटक से पश्चिम दक्षिण बैकु-ण्ठ नाम का एक छोटा मकान है जहां बहुतेरे पण्डे यात्रियों से

अटका संकल्प कराते हैं कपालमोचन और यमेश्वर जगदीश के मन्दिर के कोठरी के बाहर तीन मुख वाले कपालमोचन शिव का मंदिर है। यहां से थोड़ी दूर पर दक्षिण एक मन्दिर में रामेश्वर शिवलिंग है। यहाँ से थोड़ा दक्षिण गोपीनाथ का मन्दिर है।

श्वेत गंगा

स्वर्गद्वार रास्ते के पास श्वेतगंगा नामक एक पक्का तालाब है। इसके किनारे पर श्वेतकेश्वर का मंदिर बना हुआ है। इनकी मूर्ति भी काठ की बनी है इनका भी कलेश्वर के समय कलेश्वर बदला जाता है।

स्वर्ग द्वार

जगन्नाथजी के मन्दिर से एक मील पर समुद्र के किनारे चौथाई मील के लम्बाई में स्वर्गद्वार हैं जहां यात्री लोग समुद्र की लहर में स्नान करते हैं।

मलूकदास और कबीरदास

समुद्र के किनारे बहुत से छोटे २ मठ हैं मलूक मठ में अनेक मूर्ति का दर्शन होता है। रोटी और साग प्रसाद मिलता है। कबीरदास के मठमें कबीरदासके चौरा का दर्शन होता है और तुरानी यानी भातका फेन या पानीका प्रसाद मिलता है। यहां नानक शाहियों का भी मठ है। मरने के पहले स्वर्ग द्वारपर लोग आते हैं।

लोकनाथ महादेव

श्री जगन्नाथ जी के मन्दिर से लगभग १ मील की दूरी पर लोकनाथ महादेवजी का मन्दिर है, यहाँ जल की भूरी फूटी है। मन्दिर सदा अथाह जल से भरा रहता है जल के भीतर शिवलिंग है। यह जल नाले में से होकर पार्वती कुण्ड में जाकर गिरता है। शिवरात्रि के दिन तमाम पानी के निकल जाने पर शिवजी का दर्शन होता है। पीछे फिर दस हाथ ऊँचे पानी से मन्दिर भर जाता है। शिवरात्रि के दिनों में हजारों आदमियों का मेला होता है।

मारकण्डेय तालाब

श्री जगन्नाथजी के मन्दिर से करीब डेढ मील की दूरी पर यह तालाब है सब लोग पहले इस तालाब में स्नान कर लेते हैं तब श्री महाप्रभु का दर्शन करते हैं।

चन्दन तालाब

मारकण्डेय तालाब से पूर्व कटक के रास्ते पर करीब २२५ गज चौड़ा और इससे अधिक लम्बा चन्दन तालाब (पोखरा) है। अक्षय त्रितिया के दिन देवताओं की चन्द मुर्तियों को नाव पर चढ़ाकर तालाब में जल क्रीडा कराई जाती है।

जनकपुर

श्रीमहाप्रभु के मन्दिर से लगभग १ मील पर जनकपुर है। पुराण के अनुसार इसका नाम गुठिच है। इसी जगह पहले-पहल काष्ठ की मूर्तियाँ रची गई थीं। इसीलिये इसको

जनकपुर अर्थात् जन्मस्थान कहते हैं। यहाँ खास मन्दिर में ४ फीट ऊँची १६ फीट लम्बी पत्थर की वेदी है जिसपर रथ-यात्रा के समय पर तीनों प्रधान मूर्तियाँ बैठाई जाती हैं। यह मन्दिर बहुत पुराना है।

इन्द्रद्युम्न तालाब

जनकपुर से थोड़ी दूर पर यह तालाब है। तालाब के पास एक मन्दिर में नीलकंठ और इन्द्रद्युम्न और दूसरे मन्दिर में पद्मनाभ भगवान हैं।

प्रबन्ध

श्री जगन्नाथजी के मन्दिर की आमदनी लगभग ५ लाख रुपया है। यात्रियों की पूजा से करीब ६ लाख रुपया आता है। यहाँ के कुल कर्मचारी ५ हजार से ऊपर हैं। २० हजार से अधिक पुरुष, स्त्री, बालक, इत्यादि को मन्दिर से परवरिश होती है। जिसमें करीब ७०० सौ आदमी मन्दिर के काम में नितत हैं। कुछ तो श्रीमहाप्रभू का बिस्तर लगाते हैं, कुछ जगाते हैं, कुछ पानी, कुछ भोजन और कुछ पान देते हैं। कुछ कपड़े धोने के काम कुछ पोशाक रखने के काम में हैं। ४०० रसोईदार और १००० से भी ज्यादा पुजारी और पण्डे हैं। सब प्रबन्ध का भार पुरी के राजा पर है।

नित्य सेवा

सवेरे घण्टी बजाकर श्रीमहाप्रभु बलभद्र, सुभद्रा जगाई जाती हैं। बाद कपाट खोला जाता है और धूप दिखाया

जाता है। भोजन की कुछ सामग्री सिंहासन के आगे लगाई जाती है। सब भोगों में सकाल भोग, प्रियवर भोग, सान्ध्य भोग और शृङ्गार भोग प्रधान है। राजा की सामग्री खास भोग मन्दिर में लगाई जाती है। गोपाल वल्लभ नाम की एक खास सामग्री और महल की बनी प्रतिदिन भोग लगायी जाती है। यह भोग बिकता है। और इसकी आमदनी राजा के खानगी हिसाब में रख ली जाती है। चारो भोग के समय एक घंटे तक मन्दिर बन्द रहता है।

ऐसा प्रसिद्ध है कि कर्मा नाम की एक स्त्री जो वात्सल्य भाव की उपासना करती थी। वह नित्य प्रति प्रातःकाल उठकर बिना हाथ धोए तथा शुद्ध हुए अङ्गारे पर एक छोटे पात्र में खिचड़ी बनाकर अत्यन्त भक्ति और प्यार से भगवानको भोग लगाती थी। दयामय भक्तवत्सल भगवान पुरुषोत्तम पुरी से आकर उस खिचड़ी का भोजन करते थे। एक दिन कोई साधु कर्माबाई को शुद्ध और आचार से भोग लगाने की शिक्षा देकर चला गया कर्माबाई ने भी वैसा ही किया तब भगवान के भोजन में देर होने लगी। भगवान् के आदेशानुसार पंडोंने उस साधु को ढूंढ निकाला और उससे कहा कि तुम शीघ्र जाकर कर्माबाई को पहले की भाँति भोग लगाने की शिक्षा दो। साधु ने वैसाही किया कर्माबाईने अति प्रसन्न हो पहले की भाँति बर्तन स्नानादि किये भोग तैयार किया और भोग लगाने लगी। भक्तवत्सल भगवान् ने इस प्रकार अपने भक्तका मान बढ़ाया। अभी तक पहले कर्माबाई का भोग (खिचड़ी का) लगाया जाता है।

९ शरत् पुर्नवासी--आश्विन के पूर्णिमा को।

१० देवोत्थान--कार्तिक--शुक्ल एकादशी को।

११ भगवान् को गरम कपड़े पहनाने का उत्सव माघ में जिस दिन जाड़े के कपड़े पहनाये जायँ उस दिन उत्सव मनाया जाता है।

१२ पुष्पाभिषेक--पौस की पूर्णिमा को होता है।

१३ मकर संक्रान्ति मकर सूर्य होने के दिन।

१४ फगडोल--होली भी पुरी में सबसे प्रसिद्ध।

धुलहण्डी के दिन मदन मोहनजी झूलते हैं सब लोग उन पर फूल चढ़ाते हैं। इसी दिन श्रीजगन्नाथजी का राज भेट उत्साह होता है।

१५--रामनवमी--इस दिन भी भगवान रामचन्द्रजी का वेष मनाते हैं।

१६ दमनाजिका--दमन नाम के दैत्य के मारने का उत्सव होता है।

१७ चन्दन यात्रा--वैशाख की अक्षय तृतीया को चन्दन तालाब पर यात्रा होती है। उस समय देवताओं की बल प्रतिमा नाव पर बिठाकर चन्दन तालाब में जलक्रीड़ा कराई जाती है। तालवृक्ष से वृन्दावन बनाकर फूलों से शृङ्गार इत्यादि किया जाता है। इनके अतिरिक्त समय समय पर कई बार उत्सव हुआ करता है।

१८ रुक्मिणी हरण

थोड़े में पुरानी कहानी (पद्मपुराण) शत्रुघ्नजीने कहा कि यात्रा करते हुए जाते २ एक पर्वताश्रम देखकर अपने मंत्री

से पूछा कि यह क्या है। मन्त्री सुमिति ने कहा कि यह नील पर्वत है, यहाँ पुरुषोत्तम श्रीजगन्नाथजी विराजमान हैं। यह दिर्शन पूजन और चैत्य भक्षण करने से प्राणी चतुर्भुज हो जाता है।

मन्दिर के भीतर यात्रा करने की विधि

मन्दिर में प्रवेश करने से पूर्व शंख चक्राङ्कित सिंहद्वार को साष्टांग दण्डवत करके तब श्रीजगन्नाथजी के मन्दिर में प्रवेश करना चाहिये। पतितपावनजीका दर्शन करना जो कि सिंह-द्वार के रक्षक हैं इसके बाद विश्वनाथ भोगमंडल अनाज तथा गणेश जी का दर्शन कर वटेरा महादेवजीका दर्शन कर, पट मंगला देवीजी का दर्शन करना चाहिए। वटवृक्ष की परिक्रमा करके अनंत भगवान क्षेत्रपाल वो नृसिंहजी का दर्शन करना चाहिये। रोहिणी कुंड' जिस कुण्डका जल कौवे ने पानकर चतुर्भुज मूर्ति पाया था। यहीं विमलाक्षी देवी भी हैं सरस्वती देवी जगन्माता लक्ष्मी अर्कक्षेत्र निवासी पातालेश्वर महादेव उत्तर में, जो उत्तरामणि देवी हैं उनका दर्शन करना चाहिए दोनों बार पद्म सुदर्शन चक्र जगन्नाथजी के लिए भगवान से प्रार्थना कर जगमोहन मन्दिर में प्रवेश करना चाहिए। गरुड़ के पीछे होकर द्वारपाल विजय के पास जाकर दर्शन वो नमस्कार कर आगे जाना। बलभद्र, सुभद्राजी, जगन्नाथजी, सुदर्शनजी इन सब मूर्तियों का दर्शन कर साष्टांग दण्डवत कर पूजा आदि करना वो भेंट आदि जो कुछ यथासाध्य देना चढ़ाना चाहिये। ब्राह्मणों की स्तुति करके यहाँ से जाना और 'कपालमोचन' नीलकण्ठ यमेश्वर जी का दर्शन करना,

विश्वेश्वरजी लोकनाथ मारकण्डेयजी का दर्शन करना। जो इस रीति से परिक्रमा कर जगन्नाथजी का दर्शन करते हैं उनको साक्षात् दर्शन का फल होता है।

फिर इसके बाद इस प्रकार दर्शन करना चाहिए। समुन्द्र स्नान श्वेतगंगा मार्कन्डेश्वर तालाब में स्नानकर, जनकपुर से इन्द्रद्युम्न सरोवर में स्नान दान पितृश्राद्ध कर जनकपुर से मन्दिर की देवी का दर्शन पूजन कर पुनः वेंणी हनुमान का दर्शन कर लोकनाथ, नीलकंठ, कपालमोचन, यमेश्वर, विश्वेश्वर बिलदेश्वर, कानपाता महावीर, श्वेतमाधव, भास्कर कूप, चक्रतीर्थ नृसिंह वटकृष्ण आदि का दर्शन कर यथा शक्ति तीर्थों के ब्राह्मण पंडा, भूखों का आदर सम्मान कर आशीष ले और कम से कम तीन रात्रि वासकर, निजस्थान को चले रास्ते में साक्षी गोपाल का दर्शन कर तीर्थों के ब्राह्मण वो भूखों से आशीष ले भुवनेश्वर महादेव का दर्शन कर वैतरणी नदी में स्नान, गोदान श्राद्ध कर निज स्थान को जाय और ब्रह्मचर्य धर्म से तब तक रहे जब तक तीर्थ यात्रा का उद्यापन न कर ले। पश्चात् यथा शक्ति गुरु ब्राह्मण और भूखों को भोजन कराय, अपने भाई बन्धु इष्ट मित्र कुटुम्ब पड़ोस आदि संयुक्त आनन्द भोजन कर जीवन मुक्ति का फल लें।

(१) श्री जगन्नाथ जी (२) सिद्ध बकुल (३) शंकराचार्य मठ (४) नानक मठ (पताल गंगा यह है) (५) चैतन्य मठ (६) स्वर्गद्वार (७) कानपाता हनुमान (मन्दिर से आध मील पर) कहा जाता। कहावत है कि श्री सुभद्रा देवी को

समुद्र की आवाज से भय उत्पन्न हुआ था इसलिए श्री महाप्रभु के आज्ञानुसार ही हनुमान जी हमेशा कान लगाये रहते हैं कि आवाज मन्दिर में न जा सके वहाँ भी पिण्डदान का विधान है (८) सुदामापुरी (९) हरीदासमठ (१०) कबीर मठ (११) बिंदुर आश्रम (१२) श्वेत गंगा। (१३) चक्र तीर्थ (१४) बेड़ी हनुमान। हनुमानजी का यहीं पहरा था यहीं बिना आज्ञा के श्रीअयोध्याजी को चले गये थे इसलिए इनके पैरों में बेड़ी पड़ी हुई है। (१५) चक्र नारायण जी (१६) जनकपुर विश्वकर्मा ने चारो मूर्तियों को यहीं बनाया था (१७) इन्द्रद्युम्न तालाब। इस स्थान पर राजा इन्द्रद्युम्न ने सहस्र अश्वमेध यज्ञ किया था और असंख्य गोदान किया था, गायों के खुर से पृथ्वी में गड़हा हो गया था और संकल्प के पानी से वह गड़हा भर कर सरोवर सृष्टि हो गयी थी [१८] नृसिंह। [१९] नीलकण्ठ। [२०] मार्कण्डेय सरोवर, यहाँ पिण्ड दान होता है। [२१] हरी पार्वती। [२२] मार्कण्डेश्वर [२३] चन्दन तालाब यहाँ वैशाख शुक्ल ३ से लेकर १२ दिन तक भगवान मनमोहनजी की मूर्ति नाव में बिठाकर घुमायी जाती है चन्दन यात्रा के समय यहां बड़ा उत्सव होता है। [२४] कपाल मोचन। [२५] अलवुकेश्वर। [२६] कपोतेश्वर। [२७] यमेश्वर [२८] मृतुञ्जय [२९] विश्वेश्वर [३०] बिल्वेश्वर। [३१] गोपीनाथ। ३२. लोकनाथ। श्रीजगन्नाथजी से दो मील दूर है इस शिवमूर्ति की स्थापना श्री रामजी ने स्वयं अपने हाथों से की थी। ३३. श्वेतमाधव भास्कर कूप देखने योग्य है।

भुवनेश्वर महादेव

काशीपति विश्वनाथजी श्री जगन्नाथ दर्शन को आये और जब दर्शन लाभकर फिर तब कुछ दूर जाकर प्रेम मग्न होकर ध्यान धर कर बैठ गए तब श्री जगन्नाथ देव ने प्रसन्न होकर दर्शन दिया 'वरम्रूहि' कहा तब श्री शंकरदेव ने कहा कि आप दया कर वन हमारे नाम से विख्यात कर दीजिए अतएव श्री नीलामाधव 'एवमस्तु कहकर अन्तर्ध्यान हो गये तभी से महादेव जी उस वन में करोड़ों लिंग से वास करते हैं। उसी समय से उस वनके महादेव का नाम भुवनेश्वर हो गया वहाँ पर बिन्दह नाम एक सरोवर है। उसमें स्नान करने से सम्पूर्ण तीर्थ स्थान का फल होता है त्रेता युग में जब श्रीरामजी ने सेतुबान्ध रामेश्वर को स्थापित किया तो श्री महादेवजी पर चढ़ाने के लिये समस्त तीर्थोंका जल लाने की आज्ञा हनुमान को दी। हनुमान जल लेकर आ रहे थे, जब इस वन में आये तो एक बूंद जल वहांपर गिर गया तभी से उसका नाम बिंदूहर सरोवर हुआ है।

श्री जगन्नाथ स्तुति सवैया

आनि दयो गुरु को सुत जाये के भूप सुदामा कियो छनमाहीं।
लखिदास दुखी दलिरावणको दईलंक विभीषण को गहि बाहीं॥
साधु को साग सलोनी लगो दुर्योधन के पकवान न खाहीं।
हाथी के हाँक पै कान दियो हरि मौन भये कस बोलत नाहीं।१।
पीपा की छाप दई करुणानिधि छिपा कि छानि छवावत सोई।
मन स्वरूप भये नृप के पग सेय बिदा सब काम बृथाहीं॥

तोड़ जंजीर कबीर के काज, सुकाढ़ि लिए नाहि के प्रभु बाही ।
विप्रके कंचन धाम किए हरि मौन भए कस बोलत नाहीं ॥२॥
बंशी बजाय करी बिनती बश होय रहें रस माहीं ।
माखन खाय चुराय न काहुँ को बूझ लड़े झगड़े ब्रज माहीं ॥
दोहा कवित्त छन्द पढ़े सब नाचेरु गाय अहीरन माहीं ।
चूक भई हमसो अस क्या हरि मौन भये कस बोलत नाहीं ॥३॥
दान गली बिच ग्राम अलि वृषभान लली के रहे गहि बाहीं ।
इन्दुरीराखि पिछाय गाँव छबीली छुए पुनि छैल छलसे लजाहीं ॥
किन टोना किए कछु डारि दई पढ़िके काह परछाहीं ।
कूबरि ऊपर भोलि रहे हरि मौन भये कस बोलत नाहीं ॥४॥
जात बनाय बनायो खेत, बिना हरि बीज बने उपजाहीं ।
दास मलूक का ठाकुर माल हमाल भये सकु बावहु नाहीं ॥
नन्द कुमार हरि जग ठाकुर को, यश गाय रहे जग माहीं ॥
चूक परि हमसो अस क्या हरि मौन भये कस बोलत नाहीं ॥५॥
सेवरी के बैर जो मीठ मिठास सराहत जात सुखाय अघाहीं ।
गिद्ध अजामिल और गणिका प्रभु दीन दयाल सदा तुम ताहीं ॥
बेद पढ़ै प्रभु श्री बलि के गृह गूँगे गोपाल भये अब जाहीं ।
आप कहा कछु ही न कहा हरि मौन भये कस बोलत नाहीं ॥
खम्भहि से प्रकटे नरसिंह हन्या मणि कश्यप को तुर्ताहीं ।
चोर की अन्त न पावत वीर बाकौ दुश्शान के तिक माहीं ॥
लेप्र बावाम दियो हरि नाम बिना सब काम वृथाहीं ।
मोर मनोरथ पूर्ण करो हरि मौन भए कस बोलत नाहीं ॥७॥
कौशिक का मन राखि लिया जब राक्षस घोस पर चिघराहीं ।
गौतम नारिके तातक टारि, बरि सिय जाय स्वयंबर माहीं ॥

नन्द नन्दन है सबके प्रभु गाय रहे गुण जो जगमाहीं ॥
रावण मारि के टारि दियो हरि मौन भए कस बोलत नाहीं ॥८॥

श्री जगन्नाथ के तुम नाथ सनाथ करो अब बांह गहे से ।
वेद पुराण कथा इतिहास, जोइ निबहे एक नाम लिहे से ॥
नाम रटा सुलहा मन वाँछित ज्यो सुर अभूत पान करे से ।
आठौ सिद्धि नवो निधि सम्पत्ति पावहिं, आठ कवित्त पढ़े से ॥९॥

साक्षी गोपाल

पुरी से ७ मील दूरी पर (S.E.Rly.) में साक्षी गोपाल रेलवे स्टेशन है। यहाँ धर्मशालायें हैं। सवारी भी मिलती हैं जगन्नाथ दर्शन के पश्चात् इनका भी दर्शन करना चाहिए क्योंकि आप जगन्नाथ दर्शन करने के साक्षी स्वरूप हैं। इसलिए इनका नाम साक्षी गोपाल हुआ। यहाँ के पण्डे यात्री के साक्षी के लिए ताड़ के पत्र पर यात्रियों के नाम लिखते हैं और पूजा का प्रसाद देते हैं।